Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

प्रधानमंत्रित्व काल में राजीव गाँधी द्वारा भारत-चीन संबंधों को दी गयी नई दिशा

Dr. Somesh Gunjan*

(M.A., PhD) Political Science, LNMU, Darbhanga, Bihar

सार – भारत और चीन विश्व की दो सबसे पुरानी सभ्यता है और चीन भारत का एक प्रमुख पड़ोसी राष्ट्र भी है। विभिन्न पहलूओं पर दोनों राष्ट्रो के संबंध ऐतिहासिक और पौराणिक रहे है। भारत अपने पड़ोसी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है और इसलिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और तटस्थता के सैद्धांतिक नींव पर चीन के साथ भी संबंधों को मित्रवत बनाने का पक्षधर रहा है।

----------X----------

विषय प्रवेश

चीन में साम्यवादी शासन की घोषणा 1 अक्टूबर, 1949 को की गई और चीनी गणराज्य को मान्यता देनेवाला भारत प्रथम गैर-साम्यवादी देश बना। भारत के प्रयासों से ही चीन संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी सदस्य बना। दोनो राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय संबंधों का मुख्य आधार पंचशील समझौता है जो 1954 में चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाउ-एन-लाई और भारत के प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू के बीच सम्पन्न हुआ था। हालांकि, इसके बावजूद भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों में कई उतार-चढ़ाव होते रहे। किन्तु पंचशील के सिद्धांतों ने रिश्ते को अद्यावधि सामान्य बनाये रखा है। सन् 1962 में चीन-भारत युद्ध के उपरान्त दोनों राष्ट्रों के संबंध लगातार अविश्वास और कड़ुवाहट के दौर से गुजरते रहे हैं। किन्तु भारत के तत्कालीन और परवर्ती सरकार द्वारा स्थिति को सामान्य बनाने के लिए हरसंभव प्रयास भी होते रहे हैं। अतः प्रस्तुत शोध आलेख में प्रधामंत्रित्वकाल में राजीव गाँधी द्वारा भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों को नई गति एवं दिशा देने के लिए किए गये प्रयासों का अध्ययन किया जायेगा।

उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्वेश्य प्रधामंत्रित्वकाल में राजीव गाँधी द्वारा भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में किए सार्थक बातचीत के परिणामो को जानना है ताकि प्राप्त तथ्यों, दृष्टिकोणों एवं निष्कर्षों को संप्रेषित कर ज्ञान की अभिवृद्धि की जा सके।

प्रविधि:-

अध्ययन प्रविधि मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधिारित होगा। साथ ही प्रामाणिक तथ्यो का आधार ऐतिहासिक अध्ययन होगा।

स्त्रोत सामग्री की उपलब्धता:-

प्रस्तुत शोध आलेख के लिए अनेक समकालीन दस्तावेज उपलब्ध हैं। संकलित सामग्री मुख्य रूप से द्वितीय स्त्रोत पर आधारित होंगे किन्तु आवश्यकता पड़ने पर मौलिक स्त्रोत भी तथ्यों की उपलब्धता में सहायक होंगे।

परिचय:-

भारत और चीन दोनो देशों की आजादी के बाद के दौर में दोनो देशों के नेताओं ने एक-दूसरे की आकांक्षाओं एवं नीतियों की ठोस एवं वास्तविक समझ के बिना ही 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के युग को बढ़ावा दिया। उनकी एकता का आधार दोनो देशों की साम्राज्यवादी विरोधी विचारधारा थी। किन्तु, जैसे ही दोनों राष्ट्र अपनी शासन की वास्तविकताओं से रूबरू हुए, उनकी यह एकता एवं मैत्री सतही एवं क्षणिक सिद्ध हुई।[1] आपसी संबंधो में भारत-चीन सीमा विवाद पूर्व से आजतक विवाद का प्रमुख पहलू रहा है। भारत और चीन के बीच लगभग दो हजार मील लम्बी सीमा है। इस सीमा रेखा को समझौते तथा प्रशासकीय व्यवस्थाओं से नियमित किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत-चीन प्राकृतिक सीमा रेखा भी

www.ignited.in

इतनी स्पष्ट है कि दोनो देशो की वास्तविक सीमाओं के विषय में किसी को कोई शंका हो ही नहीं सकती है। समस्त भारत-चीन-सीमा को सामान्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है: भूटान के पूर्व की सीमा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल तथा पंजाब से लगती मध्य सीमा और चीन के तिब्बत एवं सिक्यांग प्रदेशो से जम्मू-कश्मीर को पृथक करने वाली पश्चिमी सीमा। भारत-चीन सीमा-विवाद मुख्य रूप से उत्तर-पूर्व में मैकमोहन रेखा तथा उत्तर-पश्चिम में लद्याख से सम्बंधित है।"[2] 1980 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी द्वारा सीमा विवाद से संबंधित मुद्दे को पारस्परिक समझौते से हल करने के लिए संभावित प्रयास किए गये। और दोनो राष्ट्र सीमा विवाद से संबंधित मुद्दे पर कुल आठ दौरे की वार्ता के लिए सहमत हुए। इस वार्ता का कुल पाँच दौर इंदिरा गाँधी के शासनकाल में ही संपन्न हुआ।

31 अक्टूबर, 1984 को श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या कर दी गई और राजीव गाँधी भारत के नये प्रधानमंत्री बने। राजीव गाँधी ने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध के प्रति सकारात्मक मंतव्य दिया। राजीव गाँधी के प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के बाद चीन के प्रधानमंत्री ने राजीव गाँधी को बधाई प्रेषित किया और यह आशा व्यक्त किया कि भारत-चीन संयुक्त प्रयास से संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में एक नया प्रयास किया जाएगा। अतएव राजीव गाँधी के प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के बाद भारत-चीन पारसंपरिक सबंधों में कुछ नये बदलाव के आसार दिखने लगे। छठे दौर के वार्ता से ठीक पहले भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री बलिराम भगत और चीनी समकक्ष यू.ज्यू.क्वीन से न्यूयार्क में मिले और दोनो ओर से आगामी वार्ता के लिए सकारात्मक संदेश प्राप्त हुए। चीन ने सीमा विवाद को समाधान के लिए आपसी समझ और समन्वय को आवश्यक माना।

भारत-चीन सीमा विवाद और आपसी वार्ता का छठा दौर:-

दिल्ली में 4 से 10 नवंबर, 1985 तक आयोजित आपसी वार्ता का छठा दौर चीन के उप-विदेश मंत्री ल्यूसियाक्वींग और भारत के विदेश मंत्रालय के तत्कालीन सचिव ए. पी. वेंकटश्वरम के बीच संपन्न हुए। जिसमें पूर्वी क्षेत्र सीमा निर्धारण के मसले पर सकारात्मक प्रगति हुई जबकि पश्चिमी क्षेत्र सीमा निर्धारण से संबंधित प्रश्नों पर साझा बातचीत के लिए दोनो पक्ष 1986 में प्रस्तावित बिजींग में अगले दौर की वार्ता के लिए सहमत हुए। इस दौरान चीन भारतीय दूतावास के लिए 3400 वर्गमीटर भूमि देने के लिए सहमत हुआ जिसपर उसने पूर्व में जबरन आधिपत्य कर लिया था। विज्ञान, टेक्नोलॉजी, जैव प्रद्योगिकी, कम्प्यूटर, कृषि आदि क्षेत्रों में तकनीकि आदान-प्रदान पर भी आपसी सहमति बनी।

सातवें दौर की वार्ता:-

1986 में प्रस्तावित 7वें दौर की वार्ता से पूर्व द्विपक्षीय संबंध पुनः असामान्य होने लगे। पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में चीन की सहभागिता और अरूणाचल प्रदेश के सुनदुरांग चू क्षेत्र में चीनी घुसपैठ अविश्वास के महत्वपूर्ण मुद्दे थे। इस तनावपूर्ण स्थिति में 19 से 23 जुलाई, 1986 तक बिजींग में 7वे दौरे की वार्ता भारत के विदेश सचिव ए. पी. वेंकटेश्वरम् के 5सदस्यीय शिष्टमंडल और चीन के विदेश मंत्रालय के तत्कालीन उपमंत्री लूई शुछिंग के बीच संपन्न हुई। किन्तु इसका कोई ठोस नतीजा नहीं निकल सका और दोनों राष्ट्र दिल्ली में प्रस्तावित आठवें और अंतिम दौरे की वार्ता के लिए आपसी सहमति व्यक्त किए।

20 फरवरी, 1987:-

आठवे दौर के बहुप्रतिक्षित वार्ता से पूर्व राजीव गांधी की सरकार ने 20, फरवरी, 1987 को अरूणाचल प्रदेश को भारत संघ के पूर्ण राज्य का दर्जा देने की आधिकारिक घोषणा की। इससे पूर्व यह क्षेत्र नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (नेफा) के नाम से जाना जाता था और भारत का एक केन्द्रशासित प्रदेश था। अरूणाचल प्रदेश के 1630 किमी का क्षेत्र भारत के पड़ोसी राष्ट्रों से लगती है जिसमे 1030किमी का महत्वपूर्ण क्षेत्र चीन के साथ सीमा निर्धारण करती है। चीन ने भारत के इस कूटनीतिक कदम का कोई विरोध नही किया जबकि इससे पूर्व 16 मार्च, 1975 ई0 को तत्कालीन भारत सरकार द्वारा सिक्किम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिये जाने के बाद चीन ने अन्तर्राष्ट्रीय मंच से भारत के इस कदम का न केवल खुलकर विरोध किया था बल्कि इस प्रश्न पर उसने संपूर्ण विश्व को भारत के विरूद्ध मुखर करने में सफल भी हुआ था। किन्तु, राजीव गाँधी की अन्तर्राष्ट्रीय छवि और कूटनीतिक नेतृत्व के कारण चीन अरूणाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने का विरोध नही कर सका।

आठवें दौर की वार्ता:-

14 से 17 नवंबर 1987 को भारत-चीन आधिकारिक स्तर की आठवें और अंतिम दौर की वार्ता दिल्ली में संपन्न हुई।इस वार्ता में चीन का नेतृत्व चीन के विदेश उपमंत्री ल्यू-शूजिंग तथा भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व भारत के

विदेश सचिव के.पी.एस.मेनन ने किया। भारत ने इस बात पर जोर दिया कि उसका इरादा चीन ने संबंधो को सुधारने और आपसी विश्वास तथा सहयोग के लिए उपयुक्त माहौल बनाने का है। तथापि सीमा विवाद से संबंधित प्रश्न पर कोई विशेष प्रगति नहीं हुई।

इस प्रकार, आठ दौर की अधिकारी स्तर की वार्ताओं के बाद भी भारत तथा चीन के बीच सीमा विवाद का कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला जा सका। किन्तु, इन वार्ताओं के परिणामस्वरूप दोनो देशो के नेता इस बात को स्पष्ट रूप से समझ गये कि नौकरशाही के स्तर पर सीमा-विवाद को नही हल किया जा सकता। इसके लिए कोई राजनीतिक समाधान ही तलाशना होगा।"[3]

राजीव गांधी की चीन यात्रा:-

आठवें दौरे की वार्ता के समापन के बाद दिसंबर 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गाँधी चीन के प्रधानमंत्री ली पेंग के आमंत्रण पर चीन क पाँच दिवसीय यात्रा पर बिजींग पहुंचे। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की यह चीन यात्रा भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों को एक नई दिशा देने का ऐतिहासिक अवसर था। लगभग 34 वर्षों बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली चीन यात्रा थी। इस अवसर पर उन्होनें बिजींग में द्विपक्षीय संबंधों को एक नये सुधार के साथ स्थापित करने की घोषणा की। इस दौरान चीन के शीर्षस्थ नेता- राष्ट्रपति योंग शांग कून्ह, कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ़ चाइना के महासचिव झाउ-जियांग, प्रधानमंत्री ली पेंग आदि से सकारात्मक बातचीत हुई। पारस्परिक व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से संबंधित समझौते भी हुए और सीमा विवाद के समाधान के लिए एक कार्यकारी दल का गठन किया गया, जिसमें दोनों पक्ष सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए सहमत हुए। दोनो देशों के प्रधामंत्रियों ने इसे दोस्ती की नई शुरूआत कहा।

राजीव गाँधी की ऐतिहासिक चीन यात्रा के पश्चात दोनो देशो के बीच संबंधो मे गुणात्मक सुधार दिखाई पड़ने लगा। वर्ष 1989 के प्रथम छः महीनों में लगभग आधा दर्जन चीनी प्रतिनिधिमंडलो ने भारत की यात्रा की। इनमें मुख्य रूप से संसदीय प्रतिनिधिमण्डल, न्यायविदों की एक टीम, अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों के विशेषज्ञ का एक दल, तथा कुछ मंत्री और अधिकारी शामिल थे। राजीव गाँधी की यात्रा के दौरान सीमा विवाद समाधान के लिए गठित संयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक 1 से 4 जुलाई 1989 को बीजिंग में हुई। जिसमें भारत तथा चीन ने जटिल सीमा-प्रश्न के शीघ्र समाधान हेतु अपने दृढ़ निश्चय की अभिव्यक्ति की।

भारत तथा चीन के बीच संबंधो को और मजबूती तब मिली जब चीन के उप-प्रधानमंत्री यू-जेकियान ने अक्टूबर 1989 में नई दिल्ली की यात्रा की तथा प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री सहित अनेक भारतीय नेताओं से मुलाकात की। यू ने कहा कि सीमा-समस्या का ऐसा हल निकाला जा सकता है, जो दोनो पक्षों को स्वीकार्य हो। इसके अलावा दोनो पक्षों ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर समान विचार व्यक्ति किये तथा एक नई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था के निर्माण के लिए साथ मिलकर काम करने पर सहमति व्यक्त की।

निष्कर्ष:-

अध्ययनोपरान्त यह कहा जा सकता है कि राजीव गाँधी की सरकार चीन के साथ द्विपक्षीय संबंधों को एक नया दृष्टिकोण दिया। पारंपरिक और द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य करने की दिशा मे विचारों मे नवीनता एक नई गति प्रदान की। सोवियत रूस का विघटन, अमेरिका का महाशक्ति के रूप में उभरना, उदारीकारण के नये दौर और विकाशील राष्ट्रों में माधुर्य संबंध बनाने की नई आवश्यकता ने प्रधानमंत्रित्वकाल में राजीव गाँधी द्वारा भारत-चीन संबंधो को सामान्यीकृत करने के लिए किए गये प्रयास परवर्ती सरकार के लिए भी अनुकरणीय साबित हुए।

संदर्भ सूची:-

1. स्वर्ण सिंह, फिफ्टी ईयर्स ऑफ़ साइनो-इण्डियन टाईज, वल्ड फोकस, (अक्टूबर-दिसंबर 1999)।
2. ए, अप्पादोराय व एम. एस. राजन, इंण्डियाज फॉरेन पॉलिसी एंड रिलेशंस, नई दिल्ली, 1985।
3. दीनानाथ वर्मा, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पुष्पेश पंत एवं श्रीपाल जैनः भारतीय विदेशनीतिः नये आयाम।
5. ए.एस.मिश्राः इंडियाज फॉरेन पॉलिसीः ए स्टडी इन इन्टरेक्शन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरट।
6. राजीव गाँधी फॉरेन पॉलिसी - 1985-89, गवमेंट ऑफ़ इंडिया ।
7. राजीव गाँधी वल्ड व्यू- गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली 1988।

www.ignited.in

8. भवानी सेन गुप्ता, राजीव गाँधी: ए पॉलिटिकल स्टडी, नई दिल्ली, 1989

9. सी.वी. रंगनाथन, 'इंडिया, चाइना रिलेशंस: प्राब्लम्स ऐंड पर्सपेक्टिव्स' वल्र्ड अफेयर्स, (अप्रैल-जून 1998) वाल्यूम-2 नं0- 2.

Corresponding Author

Dr. Somesh Gunjan*

(M.A., PhD) Political Science, LNMU, Darbhanga, Bihar